International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(2): 85-88

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(2): 85-88
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-01-2019
Accepted: 17-02-2019

डॉ. मोना बाला
जस्टिस राजकिशोर पथ, राम भवन के निकट, कदम कुआँ, पटना, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ. मोना बाला
जस्टिस राजकिशोर पथ, राम भवन के निकट, कदम कुआँ, पटना, बिहार, भारत

महाभारत कथा का साहित्यिक विस्तार

डॉ. मोना बाला

प्रस्तावना

भारतवर्ष में महाभारत ग्रन्थ को न केवल एक ऐतिहासिक ग्रन्थ के रूप में देखा जाता है, अपितु इसका महत्त्व एक आध्यात्मिक ग्रन्थ के रूप में मान्य है। महाभारत में कौरवों–पाण्डवों की कथा मुख्य है परन्तु इसके साथ ही अवान्तर कथाओं में भारतीय साहित्य के मूल्यवान रत्न, ग्रन्थ के बीज छिपे हैं। महाभारत के पात्रों में श्री कृष्ण भी हैं जो भारतीय जन–मानस को आह्लादित एवं आन्दोलित करने में सक्षम है।

भारत की ज्ञान–विरासत का विश्वकोश ग्रन्थ महाभारत है। महाभारत के वृहत् कलेवर में भारतीय दर्शन, धर्म, इतिहास, पुराण, स्मृति और काव्य सभी को समुचित स्थान प्राप्त होता है। महाभारत के वृहत् विश्वकोश पर तो यूरोपिय विद्वान भी मुग्ध रहे हैं।

महाभारत ग्रन्थ में कई मूल्यवान शिक्षाप्रद कथाएँ उपलब्ध हैं इस ग्रन्थ में गीता, विष्णुसहस्त्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज और गजेन्द्रमोक्ष नामक पंचरत्न हैं। महाभारत में विविध विषयों की व्यापकता देख कर ही यूरोपिय विद्वान ने इसे 'Epic within Epic' की संज्ञा दी, स्वयं कृष्ण द्वैपायन व्यास ने महाभारत में ही लिखा–

> धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्वभ।
> यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् कचित्।।[1]

महाभारत अपने मूल में उत्तरवर्ती संस्कृत साहित्य का एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें उपलब्ध कथाओं से प्रभावित हो कालिदास, माघ, भवभूति, भारवि आदि कवियों की रचना प्रणीत हुई।

इस ग्रन्थ में अनेक रोचक उपाख्यान वर्णित है। 'शकुन्तलोपाख्यान' यह महाभारत के आदि पर्व के अन्तर्गत सम्भव पर्व में वर्णित है, इसमें दुष्यन्त एवं शकुन्तला की कथा है, इसी उपाख्यान को आधार मानकर महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' की रचना की, जो संस्कृत साहित्य के इतिहास में कालिदास की अद्वितीय रचना अपनी लोकप्रियता के लिए जानी जाती है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् की रचना महाकवि कालिदास ने इस प्रकार किया कि यह नाटक जन–जन के हृदय में अपना विशिष्ठ स्थान रखती है, शकुन्तला और दुष्यन्त की कथा को महाकवि कालिदास एक नया कलेवर दे कर उसकी रोचकता को उच्च स्थल तक पहुँचते हैं। महाकवि कालिदास अपनी कल्पना शक्ति से इसमें पर्याप्त परिवर्त्तन कर नव प्रसंग की उदभावना की है। कालिदास ने महाभारत में वर्णित शाकुन्तलोपख्यान में अपनी कल्पना शक्ति से प्राण का संचार किया। कालिदास ने परिस्थितियों को ऐसा बनाया की वह यथोचित ही लगने लगे। कालिदास ने दुष्यन्त और शकुन्तला के वियोग में एक अभिज्ञान अंगूठी को रख साहित्य विद्या को एक सुन्दर मार्ग सूझाया। अभिज्ञान शकुन्तलम् में नायक और नायिका दोनों का चरित्र निखार अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से उपस्थित किया गया है। दुर्वासा शाप से व्यथित शकुन्तला समस्त जगत को प्रभावित कर डालती है। वैसे तो नाटक का हर पात्र स्मरणीय बन जाता है। कालिदास ने सरल एवं प्रांजल भाषा में नाटक को उपस्थित किया है। एक सामान्य कथा को कैसे असाधारण कथा के रूप में कालिदास ने मान्यता दिलाई है, यही उस नाट्य की विशेषता है।

शकुन्तोपख्यान में दुष्यंत ने शकुन्तला की सुन्दरता से व्यथित अपने मन के विषय में कहा है।

---

[1] सहायक प्राध्यापक (गेस्ट फैकल्टी), पटना विश्वविद्यालय

1 महाभारत– 1/62/53

दर्शनामेव हि शुभे त्वया मेऽपहृतं मनः।
इच्छामि त्वामहं ज्ञातुं तन्ममाचक्ष्य शोभते।।[2]

'मत्स्योपाख्यान' यह वनपर्व के अन्तर्गत मार्कण्डेय समास्या पर्व में आया उपाख्यान है इसमें मत्स्यावतार की कथा है, जिसमें प्रलय के आने पर मनु द्वारा वेद ग्रन्थों की रक्षा का वर्णन प्राप्त होता है। यह कथा अपनी रोचकता एवं लोकप्रियता के कारण विशिष्ठ मानी गई है। मत्स्यावतार की कथा शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में भी आयी है।
'रामोपाख्यान' यह वनपर्व में वर्णित उपाख्यान है जिसमें दशरथ पुत्र श्री राम की कथा वर्णित है। इस उपाख्यान को पढ़ने से इस बात का संकेत मिलता है कि वाल्मीकि के रामायण का यह संक्षिप्त रूप है। इस उपाख्यान की विद्वानों द्वारा महाभारत को रामायण के उत्तरवर्ती होने का प्रमाण स्वरूप मान्यता मिली है। वैसे इस कथा में वाल्मीकि रामायण का बहुत अधिक अनुकरण अवश्य है परन्तु अनेक स्थल पर भिन्नता भी उपलब्ध है। राम कथाओं से संबंधित कई काव्य उपस्थित हुए।
'नलोपाख्यान' महाभारत के वनपर्व में उपलब्ध एक विशिष्ट उपाख्यान है इसमें राजा नल एवं दमयन्ती की मनोहारी कथा आयी है। इस कथा को आधार बना कर श्री हर्ष द्वारा संस्कृत के सबसे वृहत् महाकाव्य नैषधीयचरित की रचना की गई है। भारतीय जनमानस के मन पर भी नल एवं दमयन्ती का एक विशेष स्थान रहा है। कथा में कई बिन्दु हैं, जो यह दर्शाने में सक्षम है कि जीवन में बड़े उतार–चढ़ाव में भी मनुष्य धैर्यपूर्वक अपनी चरित्र की विशेषता को अक्षुण्ण रख सकता है, जो उसकी जीत है। दर्शन भरे इस उपाख्यान को आधार मान कर कई रचनाएँ हुई।
'शिबि उपाख्यान' यह उपाख्यान महाभारत के वनपर्व की शोभा बढ़ाता है। इस कथा में उशीनर के द्वारा अपने प्राण दे कर बाज की रक्षा की गई है। यह कथा जातक कथाओं में अपना स्थान बनाए हुए है।
'सावित्री उपाख्यान' वनपर्व में आए इस उपाख्यान में भारतीय आदर्श नारी सावित्री की कथा वर्णित है। राजा धुमत्सेन के पुत्र सत्यवान और सावित्री की आदर्श कथा है। सावित्री द्वारा पतिव्रत धर्म की पराकाष्ठा एवं आदर्श की उच्चता का एक साथ निदर्शन उपस्थित होता है। इस कथा की भारतीय समाज अपने आदर्श मूल्यों के लिए विशिष्ट मानता रहा है। सावित्री द्वारा सत्यवान के प्राण बचाने हेतु यम के पास तक का जाना एवं पति के प्राण की रक्षा सहित घर के हित हेतु वर प्राप्त करना एक बहुत ही सुन्दर कथा है।
सावित्री ने बारम्बार अपने पति को पुनः जीवित होने की प्रार्थना यम के समक्ष रखी है तथा स्वयं को पति के बिना बेकार बताया है–

न कामये भर्तृविनाकृता सुखं न कामये भर्तृविनाकृता दिवम्।
न कामये भर्तृविनाकृता श्रियं न भर्तृहीना व्यवसामि जीवितुम्।।[3]

साथ ही सावित्री ने यम से पति को प्राणवान् करने को कहा है–

वरं वृणे जीवतु सत्यवानयं [4]

वनपर्व में आए कैरात पर्व में किरात कथा है, जिसे आधार बना कर महाकवि भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' की रचना की। इसमें किरात वेषधारी शिव एवं अर्जुन की कथा कही गई है। भारवि ने 18 सर्गों में कथा को निबध किया है। प्रारम्भ के दो सर्गों में कवि राजनीतिज्ञ पटुता के दर्शन होते हैं। चतुर्थ एवं प×चम सर्ग में प्रकृति का सुन्दर एवं विशद् वर्णन प्राप्त होता है।
मूल कथानक अति लघु है परन्तु भरवि ने इसे अपनी कवि प्रतिभा के बल पर महाकाव्य के रूप में उपस्थित किया है। महाकाव्य का अंगी रस वीर है। महाकाव्य को राजनीति के उच्च सिद्धान्त की तर्कपूर्ण तथा स्पष्ट शैली के लिए सदैव स्मृत किया जाएगा।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
न वंचनीयाः प्रभवोऽनुजीविभि ।[5]

संस्कृत के महाकवि भास के द्वारा अनेक नाटकों की रचना की गई इसमें से छः नाटकों का आधार महाभारत है। 'पंचरात्र' जिसमें महाभारत की एक घटना को आधार बना कर कल्पित नाटक की रचना की गई है। इसमें दुर्योधन द्वारा प्रतिज्ञा की गई है कि पाण्डव यदि पाँच रात में मिल जाए तो उन्हें अपना राज्य दे दूँगा। गुरू द्रोण के प्रयत्न से पाण्डव मिल जाते हैं। दुर्योधन द्वारा उन्हें आधा राज्य दे दिया जाता है। दूसरा नाटक 'मध्यमव्यायोग' में भीम की कथा वर्णित है, जिसमें भीम ने एक ब्राह्मण पुत्र को बचाया है। 'दूतवाक्य' में कृष्ण के दूत कर्म का वर्णन प्राप्त होता है। 'दूत घटोत्कच' में युद्ध में अभिमन्यु के निधन के बाद श्री कृष्ण घटोत्कच को दूत बना कर धृतराष्ट्र और दुर्योधन के पास भेजते हैं जो दशा पुत्र मृत्यु के बाद पाण्डवों की हुई है वैसी ही तुम्हारी होगी इसी इतिवृत कर कथा की उद्भावना की गई है। 'कर्णभार' में ब्राह्मण रूप धारण किये इन्द्र कर्ण से कवच–कुण्डल माँगने आए हैं इसी पर कथा का निर्माण हुआ है। 'उरूभंग' में भीम द्वारा दुर्योधन के उरू को तोड़ने वाली प्रसिद्ध कथा को आधार बना का नाटक की रचना की गई है। महाकवि भास द्वारा तेरह नाटकों में छः का महाभारतीय कथा पर आश्रित होना कुछ तो संकेत करता है।
महाकवि भट्टनारायण द्वारा 'वेणीसंहार' नाटक प्रणीत है जिसमें द्रौपदी के द्वारा अपने वेणी को दुर्योधन की मृत्यु के पश्चात ही संहारने की प्रतिज्ञा वाली कथा का विस्तरण उपलब्ध है। महाकवि भट्टनारायण ने छः अंकों में पूरी कथा को निबद्ध किया है इसका अंगी रस भयानक है। इस नाटक में रणभूमि पर जो जघन्य कृतों के वर्णन उपलब्ध है ये कवि के युद्ध के दृष्टान्त को जीवन्त रूप देने की क्रिया को बताते हैं। वैसे नाटक को बड़े कौशल एवं दक्षता से समाजिकों के समीप रखा गया है। इतिहास से प्राप्त चरित्रों को नाटक में एक विशेष निखार दिखता है। वेणीसंहार में मूल कथा में कई परिवर्त्तन दृष्टिगत होते हैं। कवि ने आवश्यकतानुसार अनेक संशोधन, परिवर्धन तथा परिवर्त्तन कीए हैं। द्वितीय अंक की कथा मौलिक है महाभारत में भानुमती का नाम नहीं है। षष्ठ अंक में राक्षस द्वारा भीम की मृत्यु का झूठा समाचार सुनकर युधिष्ठिर और द्रौपदी के चितारोहण की तैयारी का वर्णन महाभारत में नहीं उपलब्ध है। कवि की मौलिक कल्पना ने नाटक में उत्साहवर्धन किया है।
क्षेमीश्वर के द्वारा नैषधानन्द की रचना का आधार महाभारत ग्रन्थ ही रही जिसमें नलोपाख्यान की कथा सात अंकों में वर्णित की गई है। यह रूपक अपने प्रासाद शैली के लिए प्रसिद्ध है।
त्रिविक्रमभट्ट के द्वारा नलचम्पू एक प्रसिद्ध चम्पू है जिसमें राजा नल एवं दमयन्ती के प्रणय का सुरम्य वर्णन प्रस्तुत किया गया है। यह चम्पू सात उच्छ्वासों में विभक्त है। यह चम्पू महाभारत के वनपर्व के नलोपाख्यान से प्रेरित है। इस चम्पू को श्रेष्ठ कोटि का माना जाता है। त्रिविक्रमभट्ट की नलचम्पू चम्पू साहित्य का सर्वप्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ है। इस काव्य के सात उच्छवासों में प्रत्येक उच्छवास के अन्तिम श्लोक में 'हरचरण सरोज' शब्द का प्रयोग मिलता है। नल चम्पू का कथानक अपूर्ण अवस्था में है जिसका कोई स्पष्ट कारण समझ में नहीं आता। डा.ए.बी.कीथ ने इसे एक असाधारण काव्य माना है। काव्य की रचना क्लिष्ट है। श्लेष का प्रयोग अधिक है साथ ही लम्बे–लम्बे वाक्यों का प्रयोग

[2] महाभारत– 1/71/13
[3] महाभारत– 3/297/53
[4] महाभारत– 3/297/54 का श्लोकांश
[5] किरातार्जुनियम्– 1/4 का श्लोकांश

है। इस चम्पू की विशेषता सभंग श्लेष प्रयोग है। श्लेषों का चमत्कार नितान्त श्लाघनीय है।[6]

क्षेमेन्द्र के द्वारा भारतमंजरी में महाभारत का संक्षेप प्रस्तुत किया गया है इसमें यह संक्षेप इतनी कुशलता एवं विवेक से किया गया है कि मूल ग्रन्थ की आस्वादता अक्षुण्ण रहती है। हरिवंश सहित उन्नीस पर्वो में कुल 10,792 पदों का संक्षेप प्रस्तुत किया गया है।

कॉचन पण्डित की 'धनंजयव्यायोग की रचना की इसमें अर्जुन के सम्बन्ध पर सृजन आधारित है।

माघ के द्वारा 'शिशुपालवध' प्रणीत है, महाभारत के सभापर्व पर आधारित है। महाकवि द्वारा बीस सर्गो में राजसूय यज्ञ में श्री कृष्ण के द्वारा शिशुपाल का वध वर्णित है। हालांकि कथानक बहुत छोटा है लेकिन महाकवि ने इस 1350 श्लोकों द्वारा वर्णित किया है। निश्चित रूप से माघ एक अद्वितीय कवि हैं। इस महाकाव्य में श्रेष्ठ कवित्व का निदर्शन व्याप्त है। इसमें कवि के द्वारा श्री कृष्ण का लम्बा यशोगान है, जो विशेष प्रभाव उत्पन्न करता है। स्वयं कवि ने लिखा है–

> लक्ष्मीपतेश्चरित कीर्त्तन मात्र चारू।

साथ ही यह वर्णन भी अत्यंत सुन्दर है–

> उपप्लुतं पातुमदो मदोद्धतैस्त्वमेव विश्वम्भर! विश्वमीशिषे ।
> ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः ।।[7]

माघ ने अपने पाण्डित्य से इस महाकाव्य को एक सबद्ध एवं सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है महाकवि ने महाकाव्य में यथा स्थल छन्दों, अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया। इस रचना में राजनीति के गाम्भीर्य तत्व के भी निदर्शन प्राप्य होते हैं।

श्रीहर्ष के द्वारा नैषधीय चरित की रचना की गई है। यह महाकाव्य संस्कृत साहित्य में लब्ध प्रतिष्ठ है। इसका आधार महाभारत के वन पर्व में आयी नलोपख्यान है। नैषधीय चरित 22 सर्गो का बहुत बड़ा काव्य है जिसके प्रत्येक सर्ग में 100 से ज्यादा श्लोक हैं। लेकिन 13वें और 19वें सर्ग में क्रमशः 55 और 66 श्लोक ही हैं। श्रीहर्ष ने अपने महाकाव्य में महाभारत में वर्णित कथा का बहुत छोटा अंश ही लिया है इसमें नल–दमयन्ती के प्रेम से लेकर विवाह तथा विवाहोपरान्त क्रीडा का वर्णन किया गया है। श्रीहर्ष ने अपने एक श्लोक में अत्यंत सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है–

> सरोरूहं तस्य दृशैव निर्जितं, जिताः स्मितेनैव विधोरपि श्रियः ।
> कुतः परं भव्यमहो महीयसी तदाननस्योपमितौ दरिद्रता ।।[8]

कुलशेखर वर्मन् के द्वारा 'सुभद्रा–धनंजय' का आधार महाभारतीय ही है जिसमें सुभद्रा और अर्जुन की कथा वर्णन प्राप्त होता है।

नीतिवर्मन् ने 'कीचकवध' की रचना की है जिसका आधार महाभारत विराट पर्व है। महाभारत में पाण्डवों के वनवास में एक वर्ष का काल अज्ञातवास रूप में बीताना था, सो पाण्डव विराट नगर में छद्म रूप में उपस्थित हुए है विराट के राजकुमार की दृष्टि द्रौपदी पर है इस कारण भीमसेन के द्वारा उसका वध होता है।

राजशेखर ने 'बालभारत' नाटक की रचना की है। यह नाटक केवल दो अंकों में ही प्राप्य है, जिसमें द्रौपदी स्वयम्वर, द्यूतक्रीडा और द्रौपदी चीरहरण तक की ही कथा का निबद्ध किया गया है।

वत्सराज ने किरातार्जुनीयव्यायोग की रचना की है जिसका आधार महाभारत का वनपर्व है जिसमें शिव और अर्जुन के युद्ध का वर्णन है। यह एक लोकप्रिय व्यायोग की कोटि में आती है।

कृष्णनन्द के द्वारा सहृदयानन्द में नल–दमयन्ती की कथा कही गई है। यह महाकाव्य 15 सर्गों में विभक्त है इसमें भाषा की सरलता का विशेष ध्यान रखा गया है।

अगस्त्य के द्वारा 'बालभारत' की रचना की गई है। जिसका आधार भी महाभारत ग्रन्थ है।

रामचन्द्र ने नलविलास एवं निर्भयभीम की रचना की ।इन दोनों का आधार महाभारत ग्रन्थ रहा है। निर्भयभीम एक व्यायोग है, इसमें एक अंक है।

प्रह्लाद देव ने 'पार्थ पराक्रम' नामक व्यायोग की रचना की है। यह एक प्रसिद्ध व्यायोग है, जिसमें अर्जुन के द्वारा विराट की गायों के उद्धार की कथा है, जो महाभारत के विराट पर्व पर आधारित है।

मोक्षादित्य के द्वारा 'भीम पराक्रम' नामक व्यायोग की रचना की गई है, जिसका आधार ग्रन्थ महाभारत ही है।

आनन्दभट्ट की 'भारत चम्पू' का आधार महाभारत ग्रन्थ है। वास्तव में बारह स्तवकों में महाभारत की संक्षेपित कथा वर्णित है। इसमें 1000 पद्य तथा लगभग इतने ही गद्य हैं।[9] इस चम्पू में अभिव्यक्ति सजीवता के निदर्शन होते हैं। इस चम्पू में भीम–कीचक युद्ध एवं कुरूक्षेत्र में उपस्थित सेनाओं का ओजस्वी वर्णन एक विशेष प्रभाव उत्पन्न करता है।

चक्रपाणि की 'द्रौपदी परिणय चम्पू' महाभारत के आदि पर्व के कथानक पर आधृत है। इसमें पाण्डवों के एकचक्रा नगर में निवास से लेकर इन्द्रप्रस्थ में युधिष्ठिर द्वारा राज स्थापना तक की कथा का वर्णन उपलब्ध होता है।

विश्वनाथ कविराज ने 14वी. शताब्दी में 'सौगन्धिकाहरण' एकांकी की रचना की। इसमें पाण्डवों के अज्ञात वास में भीम से याचित सौगन्धिका पुष्पमंजरी का कुबेर द्वारा पाण्डवों को उपहार स्वरूप देने का वर्णन है, यह कथा महाभारत के वनपर्व में उल्लेखित है।

रामदेव व्यास द्वारा 'पाण्डवाभ्युदय' तथा शंकरलाल की 'सावित्री चरित्र' नाम छाया नाटक के बीज भी महाभारत ग्रन्थ में ही उपलब्ध हैं। वर्त्तमान समय में वाई महालिंग शास्त्री की 'कालिप्रादुर्भाव' नाटक में महाभारतीय आधार पर कलियुग प्रादुर्भाव का मानव जीवन पर प्रभाव बड़ी सुचारू रूप से प्रदर्शित किया गया है।

महाभारत के उपाख्यानों पर तो साहित्य का विशाल भवन खड़ा है ही। इस ग्रन्थ में उपलब्ध 'भगवद्गीता' श्रद्धा का विषय रही है। गीता पर बहुत सारी टीकाएँ इसकी लोकप्रियता का परिचय देती है। गीता में भगवान श्री कृष्ण के द्वारा कर्म को विशेष बताते हुए अनेक धर्म, दर्शन, संगत वार्ता का निरूपण अत्यधिक चारू है। गीता जितनी विद्वानों के लिए कौतुक उपस्थित करती है उतनी ही सामान्य जन की श्रद्धा का विषय है। गीता का मूल इस श्लोक से प्रतिपादित होता है–

> कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदा चना ।
> मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्.गोऽस्त्वधर्मणि ।।[10]

महाभारत का युद्ध अठारह दिवस तक चला था इसके (गीता) के अध्याय की संख्या भी अठारह है। गीता के प्रत्येक अध्याय के अन्त में 'इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु' आदि कह समाप्ति की गई है ध्यान से देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि गीता को उपनिषद् न कह कर 'उपनिषदें' कहा गया है तथा सब अध्याय में इसे योगशास्त्र बताया गया है। गीता की इन बातों का सीधा मतलब यह है कि गीता में सभी उपनिषदों की दार्शनिकता एवं पावकता की दृष्टि का एक साथ साम×जयपूर्ण संकलन है तथा गीता लक्ष्य वियोग न होकर 'योग' है। योग का अर्थ मिलना है। प्रथम अध्याय में जो अर्जुन तीर–कमान छोड़कर खिन्न एवं विषादपूर्ण हाथ–पर–हाथ रखे हुए बैठा है वही अठारवें अध्याय में प्रसन्नतापूर्वक युद्ध से संलग्न होता हुआ दिखाई पड़ता है। जीवन

---

[6] संस्कृत साहित्य का इतिहास– ए.बी.कीथ, पृ.–415

[7] शिशुपालबध– 1/38

[8] नैषधीय चरित– 1/24

[9] संस्कृत साहित्य का अलोचनात्मक इतिहास–डा.बाबू राम त्रिपाठी, पृ.–269

[10] श्रीमद् भगवद्गीता– 2/47

का ध्येय और उपदेश अपने कर्म में संलग्न रहना है। गीता में योग शब्द को परिभाषित करते हुए कहा गया है–

'योगः कर्मषु कौशलम्'[11]

अर्थात् किसी भी कर्म विशेष में दक्षता। पंचम अध्याय संन्यास को भी योग कहा गया है अर्थात् 'संन्यास में दक्षता' फलसिक्त को त्याग कर्म में दक्षता ही गीता का परम लक्ष्य है।

मानव जीवन में गीता का महत्त्व उपनिषद् एवं ब्रह्मविद्या होने से भी बताया गया है। डा. कपिलदेव द्विवेदी ने गीता महत्त्व को बताते हुए इसे ''आर्य धर्म को समन्वित एवं सूत्र–बद्ध करने वाली शृंखला है।''[12]

गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग तथा भक्तियोग तीनो मार्गो से ईश्वर से एकत्व को बताया गया है। गीता की भाषा जितनी सरल है उसके भाव उतने ही गंभीर। मानव के मन में उठने वाले तीक्ष्ण जिज्ञासा का हल गीता प्रदान करती है गीता में जीवन दर्शन है।

महाभारत में वर्णित 'विष्णुसहस्त्रनाम' भी भारतीय जनमानस के बीच विशिष्ठ स्थान रखता है। इसमें भीष्म के द्वारा भगवान विष्णु की सहस्त्र नामों से स्तुति की गई है।

महाभारत में वर्णित 'गजेन्द्रमोक्ष' में गज–ग्राह की मार्मिक कथा है। जब घड़ियाल के द्वारा हाथी का पांव पकड़ लिया गया तो हाथी (गज) के द्वारा भगवान की आर्त पुकार की जिसे सुनकर भगवान गज की रक्षा हेतु दौड़े। यह बहुत ही सुन्दर रचना है। वैसे तो यह महाभारत ग्रन्थ का भाग है परन्तु स्वतंत्र रूप में भी इसकी महत्त्वता अक्षुण्ण है।

महाभारत हर काल में महत्त्व की बनी रही और समय–समय पर इससे आधारित रचनाएँ होती रही इन रचनाओं ने निश्चय ही इस महाकाव्य की महिमा बढ़ायी है। महाभारत ने नलोपाख्यान, शाकुन्तोपाख्यान, रामोपाख्यान आदि को आधार बना संस्कृत साहित्य की निधि में वृद्धि हुई। महाभारत पर हिन्दी, उड़िया, तमिल, पंजाबी आदि भाषा का साहित्य भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। वास्तव में महाभारत की उपजीव्यता के लिए भारतीय साहित्य इस ग्रन्थ का ऋणी रहेगा।

संदर्भ पुस्तकः–

1. महाभारत (मूल ग्रन्थ), अंक–।, गीता प्रेस
2. महाभारत (मूल ग्रन्थ), अंक–।।, गीता प्रेस
3. महाभारत (मूल ग्रन्थ), अंक–।।।, गीता प्रेस
4. महाभारत–च.राजगोपालाचारि, सस्ता प्रकाशन
5. श्रीमद् भगवद्गीता, गीता प्रेस
6. संस्कृत साहित्य का इतिहास–बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन
7. संस्कृत वाड्.मय का विवेचनात्मक इतिहास–डा.सूर्यकान्त, ओरिएण्ड लॉगमैन
8. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– डा. बाबू राम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास, ए.बी.कीथ, मोतीलाल बनारसीदास
10. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–डॉ.कपिलदेव द्विवेदी, रामनारायणलाल विजयकुमार
11. किरातार्जुनियम्, मोतीलाल बनारसीदास
12. शिशुपालवध, चौखम्भा सुरभारती
13. नैषधीय चरित, चौखम्भा सुरभरती
14. वेणीसंहार, चौखम्भा सुरभरती
15. वाल्मीकि रामायण, गीता प्रेस

[11] तथैव– 2/50

[12] संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–डा. कपिलदेव द्विवेदी, पृ.–127